खास गिरो नूरजमाल में लई, नूरजलाल ठौर दूजी को दई।
तीसरी जो सब दुनियां कही, करी नूर नजर तले सही।। १० ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज ने ब्रह्मसृष्टियों को परमधाम में लिया। दूसरी जमात ईश्वरीसृष्टि को अक्षरधाम का ठिकाना दिया और तीसरी जमात जीवसृष्टि को अक्षर की नजर के नीचे योगमाया में आठ प्रकार की बहिश्तों में कायमी दी।

भिस्तां बांट दइयां इन बिध, काम सबोंके किए यों सिध।
कहे छत्ता जो पेहेले ल्यावे ईमान, खास उमतका सोई जान।। ११ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज ने इस तरह से सब जीवों को उनकी करनी के हिसाब से बहिश्तें बांटकर सबको अखण्ड कर दिया और उनके सभी काम पूरे कर दिए। महाराजा छत्रसाल कहते हैं कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के ऊपर जो पहले ईमान लाएगा, वही परमधाम की खास ब्रह्मसृष्टि है।

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ ५२ ॥

लिख्या चौथे सिपारे, सुख उमत को खुदा के सारे।
कहे मक्के के काफर, आराम करते बीच घर।। १ ।।

कुरान के चौथे सिपारे में लिखा है कि खुदा ने ब्रह्मसृष्टियों की जमात को सब तरह के अखण्ड सुख दे रखे हैं, इसलिए यह माया के सुख नहीं चाहते। इस ठिकाने पर और लिखा है कि मक्का जो खुदा का घर है, उसके दावेदारों को दीन (धर्म) की चिन्ता नहीं है। वह घर में बैठकर आराम से दुनियां के सुख भोगते हैं। यहां नौतनपुरी में खुदा के स्वरूप श्री देवचन्द्रजी श्यामा महारानी हैं। उनके वारिस बिहारीजी ने चाकले मन्दिर की गद्दी ली है। उन्हें दीन (धर्म) पर यकीन नहीं है और प्राणनाथजी से मुनकिरी है। सुन्दरसाथजी जो पैसा चढ़ाते हैं उससे वह ऐशो-आराम करते हैं।

जो पूजें मक्के के पत्थर, इनों एही जान्या सांच कर।
और जिनको खुदाए की पेहेचान, सहें दुख न छोड़ें ईमान।। २ ।।

श्री बिहारीजी महाराज जो काले पत्थर के समान कठोर हृदय वाले थे। सुन्दरसाथ की उस समय के गादी पूजक समाज ने इनको ही देवचन्द्रजी के समान मान लिया है और खास जो मोमिन हैं वे श्री राजजी महाराज के स्वरूप श्री प्राणनाथजी को मानकर अपने घर परिवार को छोड़कर साथ में चल दिए और दिल्ली, उदयपुर, मन्दसौर, औरंगाबाद, रामनगर, आदि जगह-जगह पैदल चलकर लाखों कष्ट सहे, परन्तु उन्होंने अपने ईमान को नहीं छोड़ा।

तिनकी तसल्ली के कारण, महंमद को हुआ इजन।
और इसलाम कहे दरवेस, कही खास उमत इन भेस।। ३ ।।

इन मोमिनों के वास्ते ही परमधाम का सुख देने के लिए श्री प्राणनाथजी को कुलजम सरूप की वाणी से सुन्दरसाथ को सुख देने का आदेश श्री राजजी महाराज ने दिया। इन मोमिनों को दरवेश (फकीर) कहा है, अर्थात् दुनियां से वैर करने वाले और खुदा से प्रेम करने वाले फकीर कहा है। खासलखास मोमिन इस तरह के फकीरी भेष में रहते हैं।

याकी मुराद कही इसलाम, यों कह्या माहें अल्ला कलाम।
कोई कर ना सके भेव, जो महंमदको देवें फरेब।। ४ ।।

कुरान की हदीसों में कहा है कि ईमानदार मोमिन सदा ही दीन (धर्म) की इच्छा रखते हैं। जो काफिर हैं, वह श्री कुलजम सरूप की वाणी पर नहीं चलते। इस वास्ते वह कहते हैं कि श्री प्राणनाथजी के पास

Nijanand App

रसायन है। भुरकी डालकर वश में करते हैं। उनके पास चर्चा सुनने मत जाना। कोई-कोई तो उन्हें कवि और जादूगर कहते हैं और कहते हैं कि वह दुनियां को ठगने के लिए घूम रहे हैं।

बीच आवें जाएं सौदागर, वास्ते फानी फल कुफर।
काफर होए सिताबी दूर, मोमिन साहेब के हजूर।।५।।

श्री प्राणनाथजी महाराज मोमिनों के बीच बैठकर चर्चा करते हैं और चितवनी कराते हैं। इसी बीच में कई संसारी लोग धन, सन्तान, मान, शक्ति, यन्त्र-मन्त्र के लिए आते-जाते हैं। ऐसे लोग चर्चा वार्ता में रुकावट डालते हैं। पूर्ण पहचान करके मोमिन ही सच्चा सुख लेने वाले हैं और हमेशा श्री प्राणनाथजी के सामने रहते हैं।

सो काफर पड़े माहें दोजख, आखिर को जो ल्यावे सक।
जो मोमिन हैं खबरदार, डरते रहें परवरदिगार।।६।।

आखिर जमाने के खाविंद श्री प्राणनाथजी के तन को देखकर अज्ञानता के कारण बेइमानी लाते हैं। ऐसे काफिर लोग सदा दोजख की अग्नि में जलते रहेंगे। जो मोमिन हैं, उन्होंने दुनियां की रिश्तेदारियां (जो बलाएं हैं) अपने गुण, अंग, इन्द्रियों को वश में करके कुलजम सरूप की वाणी द्वारा श्री प्राणनाथजी की पूरी पहचान करते हैं और मूल स्वरूप श्री राजजी महाराज से हमेशा डरकर बन्दगी करते हैं।

बीच आखिरत के बुजरकी, हुई है इस उमतकी।
सांची गिरो जो है हक, तहां बाग भिस्त बुजरक।।७।।

आखिर के जमाने में मोमिनों की बड़ी सिफत होगी। यह मोमिन सच्चे पारब्रह्म की जमात हैं। यह परमधाम में रहते हैं जहां बाग-बगीचे सदा हरे-भरे रहते हैं।

दूध सहत की नदियां चलें, बागों बीच दरखतों तले।
है इसलाम को मेहेमानी, होसी खुदाकी मेहेरबानी।।८।।

परमधाम में जहां मोमिन रहते हैं, वहां बाग बगीचों में दरखतों के नीचे दूध और शहद की नदियां बहती हैं। श्री राजजी महाराज ने इन मोमिनों के ऊपर मेहरबानी करके परमधाम के सुखों के लिए निमन्त्रण दिया है।

जहां बिध बिध की हैं न्यामत, मेवा मिठाइयां बीच भिस्त।
करके तमासा नूर, इसलाम साहेबके हजूर।।९।।

अक्षरब्रह्म की कुदरत के खेल का तमाशा देखकर और अपनी चाहना पूरी करके मोमिन जब धाम धनी के पास परमधाम में पहुंचेंगे, तो उनके वास्ते तरह-तरह की मेवा, मिठाइयां हाजिर मिलेंगी।

जो हमेसां दरगाह के, ए बीच भिस्त खुदाएके।
और जाहेद जो चाहें भिस्त, आसिकों दीदारकी कस्त।।१०।।

अक्षरधाम के रहने वाले परहेजगार ईश्वरीसृष्टि हैं। जाहिरी बन्दगी करने वाले जीवसृष्टि बहिश्तों के सुख चाहते हैं। जो परमधाम की रहने वाली ब्रह्मसृष्टि हैं, वह आशिक अपने माशूक श्री राजजी महाराज के वास्ते कष्ट उठाते हैं।

Nijanand App

जो कहे हैं नेकोंकार, पाया छिपा भला दीदार।
जो फुरमान के बरदार, सोई नेक गिरो सिरदार।। ११ ।।

इस खेल के बीच मोमिनों ने खुदा के छिपे स्वरूप को श्री प्राणनाथजी के रूप में देखा। श्री प्राणनाथजी का ऊपर का स्वरूप पांच तत्व का है। कुलजम सरूप की वाणी से देखने में यह साक्षात् मूल स्वरूप श्री राजजी महाराज हैं। इन्होंने ही कुलजम सरूप की वाणी को अपने मुखारबिन्द से फरमाया है कि इनके अनुसार रहनी पर चलकर भजन करके चलने वाले मोमिन हैं। यह मोमिन ही जीवों को बहिश्तों में अखण्ड मुक्ति देने वाले सिरदार (प्रमुख) हैं।

ए जो कही किताबें तीन, तिन पर है हकका आकीन।
सिफत जमाने पैंगमर, रखना बीच खुदाएका डर।। १२ ।।

यह जो तीन किताबें रास, कलस और सनंध कही हैं, इनके ज्ञान से श्री प्राणनाथजी के स्वरूप की पहचान होती है और ईमान आता है, इसलिए इन किताबों द्वारा सच्चा पैगाम देने वाले आखिरी जमाने के खाविंद श्री प्राणनाथजी को बताया है। यह खुदा के समान ही महान् हैं। ऐसा समझकर इनसे डरना चाहिए, अर्थात् इनके स्वरूप को पहचानना चाहिए।

अंजील तौरेत और कुरान, इन पर होए आया फुरमान।
जो हवसेका पातसाह, पाई इन किताबों से राह।। १३ ।।

जब श्री प्राणनाथजी महाराज हवसा में थे, तब रास और कलस की दो चौपाइयां उतरीं। वहां से दीन की रोशनी बढ़ती ही गई, इसलिए श्री प्राणनाथ जी को हवसे का बादशाह कहा है। रास, कलस, सनंध किताब में वाणी को जाहेर करने का हुकम श्री राजजी महाराज ने दिया। इस वास्ते इन किताबों द्वारा ही परमधाम पहुंचने का सच्चा रास्ता मिलता है।

इनकी जो करे उमेद, मुराद इसलाम पावे भेद।
जो कहे दोस्त साहेब मोहोल, नजीक खुदाएके खासे फैल।। १४ ।।

इन तीनों किताबों की चर्चा (वार्ता) सुनने की चाहना मोमिनों के दिल में हमेशा रहती है। वह अपनी चाहना के लिए निजानन्द सम्प्रदाय के छिपे भेद तथा प्रेम और इश्क को इन्हीं किताबों से पाते हैं। जिन मोमिनों के दिल को खुदा का अर्श कहा है वही खुदा के अत्यन्त प्यारे आशिक कहे जाते हैं। वह इश्क, ईमान की अच्छी रहनी से चलकर खुदा के नजदीक रहते हैं।

सब्द न छोड़े ए महंमद, वास्ते फानी दुनियां रद।
वास्ते नेकी आखिरत, कबूं न छोड़ें खास उमत।। १५ ।।

यह मोमिन श्री प्राणनाथजी की वाणी के अनुसार चलते हैं और एक हर्फ को भी नहीं छोड़ते। झूठी दुनियां का सुख नहीं चाहते। आखिर के समय में मोमिनों को मिलने वाली नेकी के लिए ही यह कभी श्री प्राणनाथजी महाराज का साथ नहीं छोड़ते।

अदा हुए सब फरज, तब सिर से छूट्या करज।
खुसालियां इनों होसी घनी, भिस्त खजाना पाया अपनी।। १६ ।।

लोक-व्यवहार, मान-मर्यादा कर्ज के समान दुनियां के ऊपर लदी हुई है। मोमिन अपनी बन्दगी से इन सब कर्जों से मुक्त हो गए, अर्थात् दुनियां की मान-मर्यादा, बिरादरी, भाई-चारा मोमिनों से छूट गया। इन मोमिनों को परमधाम का अखण्ड खजाना मिला, जिससे इनको बड़ी खुशियां होंगी।

Nijanand App

इनों का होसी सिताब, नजीक खुदाएके हिसाब।
सब बंदगी एही मोमिन, जो अंदर के मारे दुस्मन।। १७ ।।

इन मोमिनों के इश्क, ईमान, बन्दगी, सेवा और कुर्बानी का हिसाब जल्दी ही होगा। इस वास्ते श्री प्राणनाथजी महाराज कहते हैं, कि हे मोमिनो! अपने शरीर के अन्दर के मान, गुमान, काम, क्रोध, अहंकार और गुण, अंग, इन्द्रियों की सभी इच्छाओं को समाप्त कर दो। यही सम्पूर्ण बन्दगी है।

एही कही तुम हकीकत, ए कबूल करो हुकम सरीयत।
आप रखो पांउं उस्तुवार, मैदान लड़ाई हो हुसियार।। १८ ।।

स्वामीजी कहते हैं कि कुरान के चौथे सिपारे की हकीकत मैंने तुमको बताई है अपने मूल घर परमधाम में पहुंचने का तरीका बताया है। उसे स्वीकार करो और उस रास्ते में ईमान, इश्क, सेवा, बन्दगी में अपने आप को दृढ़ता से लगाकर अपने दिल में माया की चाहनाओं को समाप्त करो। गुण, अंग, इन्द्रियां जो हराम की तरफ खींचती हैं, उनसे लड़ाई करो।

ए जो बैठा माहें सबन, एही खुदाएका है दुस्मन।
काफर करे बोहोतक सोर, तो मोमिनों सों न चले जोर।। १९ ।।

सभी लोगों के अंग-अंग में शैतान अबलीस बैठा है। यह खुदा के रास्ते में दुश्मन बनकर बैठा है। काफिर लोग मोमिनों को रास्ते से हटाने के बहुत उपाय करते हैं, मगर मोमिनों के ऊपर उनकी ताकत चलती नहीं।

बाजे नजीक अर्ज़ निमाज, और डरें नहीं हुकम आवाज।
निमाज पीछे कह्या यों कर, खुदाए का तुम राखो डर।। २० ।।

कई लोग धर्म के रास्ते पर चलकर धनी से हाथ जोड़कर विनती करते हैं, परन्तु श्री राजजी महाराज के हुकम से जो कुलजम सरूप की वाणी आई है, उससे नहीं डरते और न उस पर पूरा ईमान ही लाते हैं। वह अपने को ऊपर से दीन को मानने वाला बताते हैं। श्री प्राणनाथजी महाराज ने कहा है कि खुदा की बन्दगी भी करो और उसके बाद भी खुदा से डरो।

फुरमान बरदारी ल्यावे जोए, सिताब छुटकारा पावे सोए।
जिनों कुरान की पाई खबर, तिनों कह्या यों दिल धर।। २१ ।।

श्री मुख वाणी का जो आज्ञाकारी होगा और पूरे ईमान से सेवा बन्दगी करेगा, वह माया की फांसी से जल्दी छुटकारा पाएगा और परमधाम जाएगा। श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुरान के रहस्य दृढ़ता के साथ खोल दिए हैं।

नफसों से करो सबर, मारो हिरस हवा परहेज कर।
दिलसे दृढ़ करो सबर, साबित बंदगी मौला पर।। २२ ।।

अपने गुण, अंग, इन्द्रियों से तथा बदफैली (बुरे कामों) से बचकर रहो। माया की चाहना झूठी है। इससे परहेज करके छोड़ दो। इस बात को दिल में निश्चित रूप से रख कर सब्र करो। तब तुम्हारी बन्दगी और सेवा श्री राजजी महाराज पर पूरी है।

Nijanand App

बंदगी वाले खुदाए राखत, बलाए सेती सलामत।
कजाए का सिर लेओ हुकम, हक मिलावे को रूह तुम।। २३ ।।

ईमान से बन्दगी करने वाली आत्माओं को धाम धनी मेहरबानी करके दुनियां के कष्टों से बचाकर रखते हैं, इसलिए यदि तुम्हारी आतम श्री राजजी से मिलना चाहती हो तो इन्साफ की वाणी कुलजम सरूप के अनुसार चलो।

दूर करो जो बिना हक, करो उस्तुवारी जो बुजरक।
लुत्फ मेहेरबानगी पाओ भेद, छूटो तिनसे जो है निखेद।। २४ ।।

श्री राजजी महाराज के बिना माया की चीजों को छोड़ दो और दीन (धर्म), ध्यान, इश्क, प्रेम भाव के रास्ते पर दृढ़ता के साथ चलो। तब दुःखदायी माया से छूटकर तुम निर्मल हो जाओगे और तब श्री राजजी महाराज के दिल की बातों के गुझ (गुप्त) भेद उनकी मेहरबानी से जान सकोगे।

खुदाए बीच वजूद हिजाब, रूह तुमारी बैठा दाब।
पीछे फना के फायदा सब, दौलत खुदाए बका पाओ जब।। २५ ।।

तुम्हारे पांच तत्व के शरीर ने तुम्हारी आतम को दबा रखा है, इसलिए तुम्हारे और श्री राजजी महाराज के बीच में यह शरीर ही परदा बना है। श्री प्राणनाथजी के ऊपर अपने तन, मन, धन कुर्बान कर अपने अहंकार को मिटा दो। इसके बाद बहुत फायदा मिलने वाला है। तुम्हें धाम धनी के अखण्ड आनन्द की बेशुमार न्यामतें मिलेंगी।

बका चाहे सो फना होए, बिना फना बका न पावे कोए।
छोड़ो नाचीज जो कमतर, तार्थें फना होउ बका पर।। २६ ।।

जो कोई परमधाम के अखण्ड सुखों को चाहने वाला हो, वह आखिरी जमाने के खाविंद के चरणों पर कुर्बान हो जाएं। बिना कुर्बानी के अखण्ड परमधाम के सुख किसी को नहीं मिल सकते, इसलिए नाचीज जो यह मोह माया है, इसको छोड़कर अखण्ड सुख के देने वाले इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के चरण कमलों पर अपने अहंकार को मिटाकर कुर्बान हो जाओ।

ढांपे थे जो एते दिन, हनोज लों न खोले किन।
बातून जो कुरान के स्वाल, सो जाहेर किए छत्रसाल।। २७ ।।

छत्रसालजी कहते हैं कि जब रसूल साहब आए थे, तब से एक हजार वर्ष तक अर्थात् सम्वत् १७३५ तक कुरान के छिपे रहस्यों को किसी ने नहीं खोला और न कोई जान ही सका था। अब कुरान के बातूनी अर्थ आखिर जमाने के खाविंद श्री प्राणनाथजी ने जाहिर कर दिए हैं।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ ७९ ॥

तीसरे सिपारे बड़ा जहूर, इमाम सुलतान का मजकूर।
महमूद गजनवी सुलतान, मिले इमाम सुख हुआ जहान।। १ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज कहते हैं कि कुरान के तीसरे सिपारे में इमाम और सुल्तान का एक किस्सा है। सुल्तान महमूद गजनवी को भी इमाम से मिलने की इच्छा हुई। जब इमाम मिल गए तो बादशाह और उसकी जनता को भी सुख मिला। जाहिरी लोग कहते हैं कि यह बीता हुआ किस्सा है, परन्तु यह तो आखिर में होने वाली घटना की जानकारी है। इस किस्से में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज हैं और महाराजा छत्रसाल के मिलने की जानकारी है।

Nijanand App